

Department: Sanskrit (Hons)

Semester: IV(GE)

Paper: SAN GE- CC- T-II

Teacher: Sri Bimal Rakshit

## विश्रुतचरितम्

अनन्तवर्माणं प्रति वृद्धमन्त्रिणः वसुरक्षितस्य उपदेशः

संस्कृत गद्यसाहित्ये ये कयेकजन महामानवेर लेखनी स्पर्शे धन्य ह्येच्छे तादेर मध्ये महाकवि दशुी अन्यतम। 'दशकुमारचरितम्' नामक गद्यकाव्ये तिनि पदलालित्यपूर्ण भाषाते दशजन कुमारेर चरित्र वर्णना करेच्छेन। सेइ सकल कुमारेर मध्ये विश्रुत अन्यतम। विश्रुत ताँर द्रमणकाहिनी वर्णना करते गिये विदर्भराज्येर अधिपति, भोजवंशभूषण, सत्यवादी, वीर, सुशासक, भृत्यानुरञ्जक पुण्यशश पुण्यवर्मार प्रसङ्ग उल्लेख करेन। पुण्यवर्मा दीर्घकाल राज्य शासन करार पर देवलोकें गमन करले ताँर पुत्र अनन्तवर्मा राजा हन। अनन्तवर्मा समस्त गुणे समृद्ध ह्येओ राजनीतिर विशेष समादर करतेन ना। एकदिन अभिञ्ज वृद्धमन्त्री वसुरक्षित गोपने कयेकटि कथा बलेच्छिलेन। वसुरक्षित बललेन यदिओ अनन्तवर्मार आभिजात्य एवं अन्यान्य गुण आछे - तिनि तीक्ष्णबुद्धिसम्पन्न, नृत्यगीत चित्रकला ओ काव्यप्रतिभासम्पन्न अर्थाँ अनन्तवर्मा राजोचित गुणसम्पन्न। कामन्दकीय नीतिशास्त्रे राजार गुण सम्पर्के बला ह्येच्छे - "न्यायेनार्जनमर्थस्य वर्धनं रक्षणं तथा।

सत्पात्रप्रतिपत्तिश्च राजवृत्तं चयुर्विधम्॥" इति।

किन्तु एइ समस्त गुण थाका सत्त्वेओ अपन्तवर्मार बुद्धि शास्त्र द्वारा परिशोधित ना हओयाय ँज्जल्य हारियेच्छे, येमन अग्निते शोधित ना हले स्वर्ण तार भास्वरता हाराय - "अनग्निसंशोधितेव हेमजातिर्नातिभाति"। वसुरक्षित आरओ



বললেন রাজা ঐশ্বর্যশালী হলেও যদি শাস্ত্রজ্ঞানহীন হন তাহলে তিনি অপরের দ্বারা স্বার্থাশেষী অসৎ লোকেদের দ্বারা অভিভূত হলেও বুঝতে পারেন না। স্বার্থাশেষীদের স্তুতিবাক্যে নিজেকে অপারিসীম শক্তির অধিকারী বলে মনে করেন। অনুরূপ উপদেশাবলী পরিলক্ষিত হয় বাণভট্টের কাদম্বরীতে।

"বুদ্ধিখুণ্ডা হি ভূমৃদন্ত্যুচ্ছিতাঃপি পরৈর্ধ্যারুহ্যমানমাত্মানং ন চেতয়তে"।

শাস্ত্রজ্ঞান না থাকায় রাজাগণ সাধ্যসাধনের মাঝে মূল্যায়ন করতে পারেন না। অবিবেচকের মত কাজ করার ফলে রাজা নিজের ও অপর লোকেদের কাছে অবমাননার পাত্র হন। -

"**অযথাবৃন্থ** কর্মসু প্রতিহন্যমানঃ স্বৈ পরৈশ্চ পরিভূয়তে"। এই সমস্ত রাজাগণ প্রজাদের যোগক্ষেম সাধন করতে পারেন না। রাজার উচিত প্রজাদের যোগ ও ক্ষেম সাধন করা। - "চাবজ্ঞাতস্যাজ্ঞা ন প্রভবতি প্রজানাং যোগক্ষেমমারাধনায়"। রাজার আঞ্জালঙ্ঘনকারী প্রজারা যথেষ্টভাবে ভাষণ ও যথেষ্ট কর্মের দ্বারা সমস্ত মর্যাদা লঙ্ঘন করে। মল্যাদাহীন হওয়ার ফলে প্রজারা ইহলোক ও পরলোক উভয়েই নিজেকে ও রাজাকে অধোগতির দিকে প্রেরিত করে।

অর্থশাস্ত্রের আলোকে প্রদর্শিত পথ অনুসরণ করলে লোকযাত্রা সুষ্ঠুভাবে সম্পন্ন হয়। শাস্ত্রই সেই দিব্যদৃষ্টি দান করে। যার দ্বারা অতীত, বর্তমান ও ভবিষ্যত বিষয়ে ধারণা স্পষ্ট হয়ে ওঠে। শাস্ত্রদৃষ্টি যার নেই অর্থাৎ শাস্ত্রদৃষ্টিরহিত ব্যক্তি বিশাল নয়নবিশিষ্ট হলেও অন্ধের তুল্য। , তিনি যথার্থ বিষয়কে দেখতে পান না। - "তেন হীনঃ সতোরপ্যায়ত

विशालयोलोचनयोरन्ध एव जन्तुरर्थदर्शनिष्वसामर्थ्यात् " इति ॥

अतएव बाह्यविद्यागुलिर प्रति आसक्ति त्याग करे राजनीतिरूप  
कुलविद्यार प्रति अनन्तवर्मार अधिक मनोयोगी हওয়া दरकार ।  
शास्त्रानुसारे आचरणेर द्वारा शक्ति ओ सिद्धिलाभ करे अप्रतिहतभावे  
समुद्रमेखला पृथिवीके शासन करून। এইभावे वसुरक्षित राजनीतिरूप  
विद्यार प्रति अनन्तवर्मार आसक्ति वृद्धिर जन्य गुरुत्वपूर्ण उपदेश दान  
करेछिलेन ।